हाइकु संकलन
जीवन -सत्य
डॉ. उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'

जीवन.सत्य

(हाइकु संकलन)

लेखक

डॉ. उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'

बी०एस०-सी०, एम० ए०, पी०-एच० डी०,
ज्योतिष बृहस्पति, ज्योतिष भास्कर, ज्योतिष मर्मज्ञ

मूल्य–500.00

ज्योतिष निकेतन, मेरठ – 250 005

प्रकाशक : **ज्योतिष निकेतन**
1065, सेक्टर 2, शास्त्री नगर, मेरठ - 250 005
फोन : (0121) 765639, 4050465

ई-बुक : **जीवन-सत्य**

लेखक : **डॉ० उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'**

सर्वाधिकार : लेखकाधीन

चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश का पुनर्मुद्रण या फोटोकॉपी करने के लिए लेखक एवं प्रकाशक की अनुमति अनिवार्य है।

JEEVAN SATYA
(HIKU SANKALAN)

WRITTEN BY :
DR. UMESH PURI 'GYANESHWAR'

PUBLISHED BY :
JYOTISH NIKETAN, MEERUT
(INDIA)

समर्पण

प्रिय कंचन को जिसने कुछ न कुछ
रचनात्मक करने को सदैव
प्रेरित किया।

—डॉ. उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'

आमुख

प्रियजनों

हाइकु का इतिहास छह दशक पुराना है। हाइकु नामक इस जापानी काव्य विद्या से सर्वप्रथम परिचय कराने का श्रेय प्रो.सत्यभूषण वर्मा जी को जाता है।

उन्होंने अपने शोध प्रबन्ध 'जापानी हाइकु और आधुनिक हिन्दी कविता में इस काव्य विद्या से परिचय कराया है।

हाइकु छठे दशक के प्रारम्भ में भारत में आया। इसका सफल प्रयोग सर्वप्रथम अज्ञेय जी ने किया। उन्होंने अपने काव्य संग्रह जोकि 1959 में प्रकाशित हुआ था के खण्ड 'एक चीड़ का खाका' में प्रकाशित 27 कविताओं को जापानी कविताओं का अनुवाद कहा है।

रवीन्द्र नाथ टैगोर जी ने अपने जापान प्रवास के दौरान जापानी हाइकु को विश्व की सबसे छोटी कविता कहते हुए कहा–'तीन पंक्तियों की कविता संसार में और कहीं नहीं है।'

इसका वर्ण विन्यास इइकु या इईकु के रूप में दिखता है। जापानी हाइकुकारों ने छठे दशक में ही पांच–सात–पांच के स्थानपर प्रतिक्रिया स्वरूप छह–आठ–नौ अक्षरों का प्रयोग करना प्रारम्भ कर दिया और इसे नव हाइकु या मुक्त हाइकु की संज्ञा दी।

इइकुकारों ने इस जापानी छन्द को तीन पंक्तियों में 5–7–5 अक्षरों के क्रम वाली 17 अक्षरीय अतुकान्त त्रिपदी कविता को स्वीकार किया है। यदि कविता में काव्य पर बली दिया जाए तो हाइकु और हास्य पर बल दिया जाए तो सेनरयु हो जाता है।

मूलत: हाइकु जीवन और प्रकृति के कार्य कलापों की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति है जबकि सेनरयु मनुष्य की दुर्बलताओं पर व्यंग्य के छींटे हैं। हाइकु में सरलता है जबकि सेनरयु में हास्य व व्यंग्य की पैनी धार है।

हाइकु की मूल प्रेरणा अध्यात्म है। हाइकु में प्रकृति के मानवीकरण को वर्जित माना गया है, क्योंकि हाइकु को सहज अभिव्यक्ति की अलंकार विहीन कविता कहा

गया है।

वस्तुबोधानुसार हाइकु गागर में सागर है। इसे सूक्त काव्य या सूक्ति काव्या या सूत्र काव्य कहा जा सकता है।

इाइकु दैनिक जीवन में अनुभूत सत्य की संक्षिप्त अभिव्यक्ति है। विषयानुसार इस कविता में ऋतु, आकाश, धरती, बुद्ध और देवता, जीवन वनस्पति, पशु–पक्षी एवं अन्य जीवन को अंकित किया गया है।

इस छन्द की ओर मेरा आकर्षण बढ़ा और मैंने डॉ. सुधा गुप्ता द्वारा संपादित एवं लिखित हाइकु को पढ़ा। कुछ अन्य कवियों के हाइकु भी पढ़े। तब मैंने सर्वप्रथम अनुभूत जीवन को 'जीवन–सत्य' नामक हाइकु शतक की रचना की। यह कितना सही बन पढ़ा यह तो पाठक ही बताएंगे। सर्वप्रथम इनको ज्योतिष निकेतन ब्लॉग पर प्रकाशित किया था। अब ई–बुक के रूप में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। अच्छी प्रतिक्रिया मिली तो जीवन के अन्य सत्य को अन्य हाइकु के माध्यम से नई ई–बुक 'ज्ञानेश्वर हाइकु सतसई' द्वारा आप तक पहुंचाएंगे। आपके सुझावों एवं प्रतिक्रियाओं का स्वागत् है।

स्नेह–पत्रों की प्रतीक्षा में।

1 सितम्बर, 2009 *आपका अपना*

सम्पर्क : ज्योतिष निकेतन
1065/2, शास्त्री नगर
स्कीम नं० 7, गढ़ रोड
मेरठ–250005 *(डॉ० उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर)*
दूरभाष : (0121) 765639, 4050465, 09719103988
E-mail : jyotishniketan@gmail.com

अनुक्रम

समर्पण	**4**
आमुख	**5–7**
अनुक्रम	**7–11**
हाइकु	**12–45**
1. ममता	12
2. सुख–दुःख	12
3. रिश्ते	12
4. अन्तर	13
5. स्नेह	13
6. पहचान	13
7. घर	14
8. मृत्यु	14
9. सपने	14
10. समय	15
11. सफलता	15
12. पुत्री	15
13. कर्म	16
14. मांग	16
15. भाग्य	16
16. पुरुषार्थ	17
17. समर्पण	17
18. जैसा चाहो	17

19. अतीत	18
20. लक्ष्यहीनता	18
21. भावुकता	18
22. अभ्यास	19
23. धैर्य	19
24. स्वार्थ	19
25. ज्ञान	20
26. मनन	20
27. अनुशासन	20
28. जीवन	21
29. विश्राम	21
30. आयु	21
31. दुःख	22
32. समाज	22
33. स्वार्थ	22
34. मंहगाई	23
35. सामर्थ्य	23
36. लक्ष्य	23
37. कठिनता	24
38. आतंकवाद	24
39. बलात्कार	24
40. कूप–मंडूक	25
41. विवेक	25

42. जिज्ञासा	25
43. भेंट	26
44. विनम्रता	26
45. सत्संग	26
46. स्वावलंबी	27
47. कर्म	27
48. सेहत	27
49. प्रगति	28
50. अश्रद्धा	28
51. उपाय	28
52. दूरदर्शिता	29
53. अपरिचित	29
54. पराभव	29
55. विद्या	30
56. सच	30
57. अनुशासन	30
58. कर्मयोगी	31
59. दुविधा	31
60. सहनशीलता	31
61. अधूरा ज्ञान	32
62. व्यवहार	32
63. योग्यता	32
64. निरर्थक	33

65. सुकर्म 33
66. वाणी 33
67. मूर्ख 34
68. झूठी आशा 34
69. आस 34
70. संबंध 35
71. जीवनसाथी 35
72. निरर्थकता 35
73. स्वार्थ 36
74. बिरादरी 36
75. विकार 36
76. कुकर्म 37
77. आशा 37
78. निराशा 37
79. लकीर का फकीर 38
80. अज्ञानता 38
81. भाग्य 38
82. दंगा 39
83. स्वछन्दता 39
84. जग हंसाई 39
85. लालच 40
86. परख 40
87. हार 40

88. असंयम 41
89. निरोगी 41
90. आत्मविश्वास 41
91. मृत्यु 42
92. कुछ न अपना 42
93. जल 42
94. सीखना 43
95. सुख–दुःख 43
96. धैर्यवान् 43
97. सफलता 44
98. मोह 44
99. जन्म 44
100. सहयोग 45

१

ममता

मां की ममता

खिलता बचपन

जीवन-वृद्धि

२

सुख-दुःख

एक है सिक्का

दो पहलू उसके

सुख-दुःख हैं

३.

रिश्ते

प्रेम की भाषा

उठता भाव-ज्वार

नए रिश्ते

४.

अन्तर

नदिया एक
किनारे जिसके दो
सदा हैं दूर

५.

स्नेह

कच्चा है धागा
पर स्नेह-बंधन
रहता पक्का

६.

पहचान

कर्म हमारे
देते हैं पहचान
यह तू जान

७.

घर

ईंट दीवारें
घर सपनों का है
लागे अपना

८.

मृत्यु

मृत्यु होती क्या
जीवन का है अन्त
नया विकास

९.

सपने

धूप का ताप
ऊर्जा की है उत्पत्ति
कई सपने

१०.

समय

मूक है लाठी
खाली कभी न जाए
समय बली

११.

सफलता

असफलता
से उपजता सदा
सफल-सूत्र

१२.

पुत्री

तनया तो है
अपनी परछाईं
विदा हो जाए

१३.

कर्म

जैसा बोओगे
वैसा काटना होगा
कृत कर्म है

१४.

मांग

भिक्षुक सभी
दाता के द्वार पर
मांग सदा हैं

१५.

भाग्य

कम न मिले
सुकर्म फल सदा
है पुरुषार्थ

१६.

पुरुषार्थ

कर्म की भाषा

जीवन का विस्तार

कर्म की गति

१७.

समर्पण

पूर्ण भाव से

लगाव जब होता

प्रभु मिलता

१८.

जैसा चाहो

दूजों से चाहा

जैसा कभी तुमने

वैसा करो भी

Thank You for previewing this eBook

You can read the full version of this eBook in different formats:

- HTML (Free /Available to everyone)
- PDF / TXT (Available to V.I.P. members. Free Standard members can access up to 5 PDF/TXT eBooks per month each month)
- Epub & Mobipocket (Exclusive to V.I.P. members)

To download this full book, simply select the format you desire below